सीमा पाठक

III

Date: / /

ग्रामीण विकास कार्यक्रम →

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात शासकीय स्तर पर साधन रूप से ग्रामीण विकास कार्यक्रम पर बल दिया गया।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू ने भारत में आर्थिक नियोजन का आरम्भ सन् 1951 में किया इसी के क्रम में सन् 1954 में ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए सामुदायिक विकास योजना तथा राष्ट्रीय प्रसार सेवाओं का सूत्रपात हुआ।

हरित क्रान्ति →

कृषि विकास कार्यक्रम को एक आन्दोलन का स्वरूप प्रदान करने हेतु 'हरित क्रान्ति' का अभिर्भाव हुआ भारत में 1964-65 से कृषि में तकनीकी विधाओं का प्रयोग तेजी से होने लगा।

इसके अंतर्गत उन्नत बीजों का प्रयोग सिंचाई के उन्नत साधनों का व्यवहार, रासायनिक उर्वरकों - रसायनों तथा कीटनाशक दवाओं का प्रयोग प्रमुख था हरिक्रान्ति के प्रथम चरण में गहन कृषि जिला कार्यक्रम (Intensive Agricultural District programme - IADP) में लागू किया गया।

Date: / /

अधिक उपज देने वाली किस्मों का प्रयोग →

इसके अन्तर्गत धान, गेहूँ मक्का, ज्वार एवं बाजरा का चयन किया गया था। सन् 1982-83 तक इसे 4 करोड़ 77 लाख हेक्टेयर भूमि पर लागू किया गया था। गेहूँ की कई नयी किस्में विकसित की गयी तथा सर्वाधिक सफलता गेहूँ की खेती को प्राप्त हुई। चावल मक्का तथा अन्य अनाजों की किस्में भी विकसित की गयीं। पंजाब, हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश में उन्नत खेती का सफलता पूर्वक प्रयोग हुआ।

2- बहु-फसल →

हरित क्रान्ति के अन्तर्गत बहु फसल कार्यक्रम को अपनाया गया। इसमें कम समय में पककर तैयार हो जाने वाली फसलें बोयी जाती है। धान की उन्नत किस्में 90 दिनों में तैयार हो जाती है इसी प्रकार मक्का और गेहूँ की भी खेती की जाती है। धान की उन्नत किस्में 90 दिनों में तैयार हो जाती है। इसी प्रकार मक्का और गेहूँ की भी खेती की जाती है। तथा वर्ष में कई फसलें ली जाती है जो ग्रामीण आर्थिक विकास की दिशा में एक क्रान्तिकारी कदम है।